उत्तराखण्ड के जनजातीय क्षेत्र जौनसार बावर की आस्थाएं एवं लोक परम्पराएं

डॉ० दीपक डोभाल
बी०एस०एम० पी०जी० कॉलेज, रुड़की

जौनसार–बावर पूर्व से ही अपनी धार्मिक आस्थाओं एंव लोक परम्पराओं के कारण आसपास के समाज से बिल्कुल भिन्न रहा है। यह क्षेत्र महाभारत काल से ही पाण्डवों की कर्मस्थली के रूप में जाना जाता रहा है। इनके सामाजिक एवं धार्मिक जीवन में पाण्डवानी संस्कृति की स्पष्ट झलक दृष्टिगोचर होती है। जौनसारी समाज पाँच पाण्डवों भीम, युधिष्ठर, अर्जुन, नकुल व सहदेव को अपना ईष्ट देवता व माता कुन्ती एवं द्रौपदी को देवी के रूप में पूजते हैं। पूरे क्षेत्र में जगह–जगह पर पाण्डवों के मन्दिर व "पाण्डों की चौरीयाँ" पाण्डव काल से ही बनी हुई हैं। जिसमें आज भी जौनसार–बावर के लोग पर्वो एवं उत्सवों के मौके पर विधिवत् पूजा–अर्चना करते रहते हैं। पाण्डवों के अलावा जौनसार–बावर वासियों का श्रेष्ठ ईष्ट, देवता (महाशिव का अवतार) 'महासू देवता' है। आज भी इस क्षेत्र के लोगों के सामाजिक एवं धार्मिक जीवन क्रियाकलापों का संचालन हनोल स्थित महासू देवता के आदेशानुसार ही चलता है।

महासू देवता का इतिहास

महासू देवता का मन्दिर त्यूनी से लगभग पन्द्रह किमी0 की दूरी पर हनोल नामक पवित्र स्थान पर टोंस नदी के समीप स्थित है। मान्यता है कि इस मन्दिर का निर्माण पाण्डवों में स्वयं भीमसेन ने समीप की शिवालिक पहाड़ी से पत्थर लाकर किया था। आज इस पौराणिक भव्य मन्दिर निर्माण की शैली अद्वितीय है। इसमें बत्तीस कंडारे (कोने) व शीर्ष भाग में एक भव्य छतरी है, जिसे 'भीम की छतरी' कहते हैं। मन्दिर का द्वार जिसमें शिव, पार्वती व गणेशजी की मूर्तियाँ पत्थर के स्तम्भों पर तरासकर बनायी गयी है। मन्दिर की भव्यता को देखकर लगता है कि द्वापर में स्वयं विश्वकर्मा जी ने आकर इस मन्दिर को सजाया संवारा होगा। महासू देवता की उत्पत्ति के बारे में अनेक कथाएं प्रचलित हैं। कहा जाता है कि इस पौराणिक काल में त्यूनी के आस–पास टोंस घाटी में 'किरमिर' नाम का दानव (राक्षस) रहता था। वह पशुओं एवं मनुष्यों को खा जाता था। उसके आतंक से पूरे क्षेत्र के लोग बहुत दुःखी थे। टोंस घाटी में मैन्द्रथ नामक गांव में हुनाभाट नाम का ब्राह्मण परिवार निवास करता था। किरमिर दानव ने उसके छः बेटों को अपना शिकार बना दिया था। गाँव में इसी तरह प्रत्येक परिवार से एक व्यक्ति को किरमिर राक्षस अपना शिकार बनाता रहता था। पुनः हुनाभाट के परिवार से भी एक व्यक्ति को किरमिर राक्षस का शिकार बनना था। हुनाभाट व उसकी पत्नी कैलावती के सात पुत्रों में छः पुत्र तो पहले ही उसका शिकार बन चुके थे। शेष बचे पुत्र की बारी से अतिचिन्तित व व्याकुल थे कि इस पुत्र के बाद हमारा वंश ही समाप्त हो जायेगा। इसी चिन्ता से दोनों पति–पत्नी रातभर रो–रोकर विलाप कर रहे थे कि तभी हुनाभाट की पत्नी अचानक तेज स्वरों में चिल्लाकर बोली "हे महासू" कहते हुए ही उनके घर के अन्दर प्रकाश पुंज के साथ आवाज आयी कि "तुम दुःखी मत हो ओ, मैं किरमिर दानव के अत्याचार से मुक्ति दिला दूंगा"। इसी आस्था व विश्वास के साथ हुनाभाट कश्मीर के लिए रवाना हो गया। हुनाभाट बीहड़, दुर्गम, जंगलों एवं पहाड़ों को पार करता हुआ बड़ी कठिनाई से थककर महासू देवता के महल कश्मीर जा पहुँचा। हुनाभाट ने महल के द्वार पर पहुँचते ही बड़े व्यथित हृदय से द्वारपालों से महासू देवताओं से मिलने की बात कही। वृद्ध ब्राह्मण हुनाभाट को द्वारपाल महासू देवताओं के पास महल के अन्दर ले गये। महल के अन्दर पहुँचते ही हुनाभाट ने देवताओं के चरण पकड़कर रोते हुए सारा वृत्तांत सुनाया। महासू देवताओं ने वचन दिया कि " तुम ये एक मुट्ठी चावल, एक मुट्ठी मास (उड़द दाल), बर्तन व छड़ी पकड़ो रास्ते में जहाँ तुम्हें भूख लगे, दो दानें चावल के बर्तन में डालना भोजन तैयार हो जायेगा यदि मार्ग में कोई बाधा या छल आये तो उड़द का दाना फेंक देना, बाधा

दूर चली जायेगी, और यदि प्यास लगे तो छड़ी से भूमि (पृथ्वी) पर ठोकना, पानी निकल आयेगा और अन्त में तुम घर पहुँचकर कुँवारे बछड़ों से ब्रह्मचारी के हाथों से खेत में हल चलाना या स्वयं भी चलाना उसी खेत में हम मूर्ति रूप में तुम्हें दर्शन देंगे।''[7]

हुनाभाट ने उक्त बतायी गयी विधि से खेत में हल चलवाया। हल की पहली (स्यूं) पंक्ति से ''माता देवलाड़ी माई'' की मूर्ति प्रकट हुई। दूसरी पंक्ति में हल चलाते समय फाली (निसड़ा) से ''बौठा देवता'' की मूर्ति निकली जिसकी एक आँख फूटी हुई थी। तीसरी पंक्ति से ''वासिक देवता'' जिसकी एक टांग लंगड़ी थी। चौथी पंक्ति से ''पवासिक देवता'' की मूर्ति निकली जिसका एक कान बन्द था। पाँचवीं पंक्ति से ''चालदा देवता'' की मूर्ति निकली जो ठीक–ठाक थी। इस प्रकार हुनाभाट ने सम्मान सहित मूर्तियों को टोकरियों में रखकर पुष्प–पत्रों से सजाकर एक स्थान पर रखकर गाँववासियों के साथ मिलकर सात दिन तक पूजा–अर्चना की। सात दिन के बाद इन देवताओं ने अपनी दिव्य शक्ति से अपने चार वीर–शुकराड़वीर, रंगवीर, कयलूवीर व कपिलावीर को किरमिर दैत्य के संहार करने का हुक्म दिया। इन वीरों ने किरमिर राक्षस से युद्ध करके अन्त में जमीन पर पटक–पटक कर उसके दो टुकड़े कर डाले। इस प्रकार पूरे गांववासी एवं क्षेत्रवासी किरमिर राक्षस के अन्त से प्रसन्न होकर चारों देवताओं बौठा, पवासिक, चालदा, वासिक की पूजा–अर्चना व जयघोष करने लगे। आज भी जब इन देवताओं का आह्वान किया जाता है तो ये देवता जिस व्यक्ति पर अवतरित होते हैं वे उसी स्थिति में नाचते हैं जैसे बौठा देवता एक आंख बन्द करके नाचता है, वासिक देवता लंगड़ाते हुए नाचता है, पवासिक एक कान से नहीं सुन सकता है, चालदा देवता इधर–उधर भागते हुए नाचता है। उक्त हरकतों के आधार पर इन देवताओं की आत्मा का पता चलता है। ई.टी. एटकिंसन ने भी 'हिमालयन गजेटियर' में महासू देवताओं की उत्पत्ति इसी प्रकार बतलायी है।[8] लेखक दिगम्बर सिंह तोमर जौनसारवासी के अनुसार 'महासू देवताओं 'की उत्पत्ति 'मांस के ढेरों से' बतलायी है। इनके अनुसार कलियुग के प्रारंभ में लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व कुरू कश्मीर में एक सुन्दर सरोवर के समीप विमलदेव जी महाराज का राज्य हुआ करता था। उनकी पत्नी माता देवलाड़ी बड़ी दयालु, धर्मात्मा महिला थी। स्वयं राजा विमलदेव जी महाराज भी आलौकिक शक्ति एवं सिद्धियों से परिपूर्ण थे। कहते हैं कि 'एक दिन भगवान शिव व पार्वती ने अपने दोनों पुत्र गणेश एवं कार्तिक स्वामी जी को पृथ्वी की परिक्रमा करने के आदेश दिये। कार्तिक स्वामी अपने मयूर वाहन में सवार होकर तीनों लोकों की परिक्रमा करने चल पड़े। लेकिन गणेश जी अपने माता–पिता के समक्ष रोने लगे कि ''मैं मूसक वाहन से कैसे पृथ्वी की परिक्रमा कर सकता हूँ। मूसक वाहन से पृथ्वी की परिक्रमा करना असंभव है मैं तो हार जाऊँगा'' कहकर गणेश जी रोने लगे। तभी भगवान शिव ने उन्हें समझाया कि ''पुत्र गणेश तुम्हारे पिता भगवान शिव तो स्वयं ही तीनों लोकों के स्वामी ''त्रिलोकीनाथ'' हैं उनकी परिक्रमा करने का अर्थ तीनों लोकों की परिक्रमा करना बराबर है''। यह बात गणेश की समझ में आयी और वे जल्दी से हाथ जोड़कर अपने पिता शिव व माता पार्वती के चारों ओर परिक्रमा करके उनके सम्मुख खड़े हो गये। इस प्रकार गणेश जी विजयी रहे और सर्वप्रथम पृथ्वी लोक में पूजे जाने लगे। उधर कार्तिक स्वामी को जैसे ही पता चला कि गणेश को यह युक्ति माता–पिता ने बतायी। वे बहुत दुःखी हुए और क्रोध में आकर कुरू कश्मीर स्थित सरोवर में पहुंचकर अपने चारों अंगों को काट डाले। इन चारों अंशो के मांस से चार देवता प्रकट हुए। जिनमें 1. वासुकी देव, 2. श्री विमल देव 3. श्री उलल देव, 4. श्री भड़वाना देव आदि। ये चारों देवता नागवंशी थे, विमल देव जी महाराज उन्हीं चारों देवताओं में से एक थे। शेष तीन देवता पाताल लोक में चले गये थे। धर्मपत्नी माता देवलाड़ी के गर्भ से चार पुत्र उत्पन्न हुए। ये चार पुत्र – 1. श्री वासिक देव, 2. श्री बौठा महासू देवा, 3. श्री पवासिक देवजी, 4. श्री भड़वाना देव जी। क्योंकि इन चारों देवताओं के पूर्वज मांस के ढेर से पैदा हुए थे इसलिए इन्हें 'मासू' (महासू) कहा जाने लगा। ये चारों भाई आलौकिक सिद्धियों से परिपूर्ण होने से आज भी जौनसार–बावर में ईष्ट आराध्य देव के रूप में पूजे जाते हैं। इन चार देवताओं के साथ कार्तिक स्वामी जी के रक्त बूदों से चार वीर–शेरकुड़िया, रंगवीर, कयलूवीर, व कपिलावीर पैदा हुए थे। आज भी ये वीर इन चारों देवताओं की आत्मा के साथ चलते रहते हैं। जौनसार–बावर में इन वीरों की पूजा की जाती है। देवताओं के मन्दिरों के साथ इन वीरों के मन्दिर भी बने हैं।

जौनसार–बावर में लगभग दो हजार वर्ष पूर्व गढ़विराट में राजा सामुशाही का राज्य था। यह स्थान नागथान के निकट था। आज भी इस महल के अवशेष एक ऊँची चोटी पर दिखायी देते हैं। इसी बैराटगढ़ या गढ़विराट में क्रूर अत्याचारी शासक सामुशाही (शामुशाह) का शासन था। वह दूध का ही सेवन करता था। पूरे क्षेत्र से प्रत्येक परिवार बारी–बारी से अपने घरों से गाय–भैंस का दूध निकालकर राजा शामुशाह के यहाँ पहुँचाते थे। राजा के सिपाही हमेशा क्षेत्र से दूध एकत्रित करवाते थे। एक दिन किसी परिवार में गाय ने दूध नहीं दिया तो उस घर की स्त्री ने राजा के सिपाही के भय से अपने स्तनों का दूध एक कटोरे में निकालकर सौंप दिया। जब दूध का कटोरा राजा के पास पहुँचा तो उसने दूध को बड़े चाव से पिया और सिपाही को बताया कि कल से राज्य की जितनी भी स्त्रियों के स्तनों पर दूध है वे सभी अपना सारा दूध निकालकर हमारे पास पहुँचायेंगे। इस भय से सभी स्त्रियों ने अपना दूध निकालकर राजा को पहुँचाना शुरू कर दिया। जिससे बच्चे भूख से मरने लगे व गायों के बछड़े दूध के लिए तड़प कर मरने लगे, तब राजा शामूशाह के अत्याचार से दुःखी होकर जौनसार के चौबीस खतों के लोगों की एक बैठक बुलायी। जिसमें चार चौतरू (चार प्रमुख व्यक्ति चुनकर) महासू देवता के मन्दिर हनोल में पहुँचे और नतमस्तक होकर महासू देवता को अपनी समस्या बतलायी। जहाँ महासू देवता ने अपनी चमत्कारी शक्ति से 'शामूशाह' के नाक, कान व पेट से देवदार के वृक्ष उगने लगे एवं उनकी जड़े गुदाद्वार को चीरकर बाहर निकलने लगी जिससे वह तड़प–तड़प कर मरने लगा। अतः अपने कुकर्मो से शामुशाह का दुःखद अन्त हुआ। जौनसार–बावर के सभी लोग महासू देवता की जय–जयकार करने लगे। लेखक ने 'मसूरी गाइड़' में ''शामुशाह'' के नाक, कान व पेट से देवदार के वृक्ष उगने की बात का वर्णन किया हुआ है। आज भी बड़े बुजुर्ग अपने बच्चों को 'शामूशाह' की कहानियाँ सुनाते रहते हैं। इन विवरणों से भी इस क्षेत्र में ''शामूशाह'' के अत्याचारी शासन की प्रमाणिकता सिद्ध होती है।

चारों महासू देवताओं के मन्दिर

हनोल के अलावा महासू देवताओं के मन्दिर जौनसार–बावर के गाँवों में भी स्थापित हैं। चारों महासू देवताओं की 'माता देवलाड़ी का मन्दिर' मैन्द्रथ गाँव में बनाया गया। हुनाभाट ने इसी स्थान पर माता देवलाड़ी की मूर्ति को हल लगाकर भूमि से प्राप्त किया था। तभी से यह मन्दिर माता देवलाड़ी की पूजा–अर्चना के लिए निर्मित किया गया था। आज भी सम्पूर्ण जौनसार–बावर के लोग इस मन्दिर में पूजा–अर्चना करते हुए इच्छित फल की कामना करते हैं।

1– वासिक देवता का मन्दिर देवधार बावर में है। यहाँ पर वासिक देवता की नियमित पूजा–अर्चना होती है।
2– पवासिक देवता को पाशिबिल का क्षेत्र दिया गया। जहाँ उसकी नियमित पूजा व्यवस्था चलती है।
3– बौठा महासू देवता का मन्दिर हनोल में स्थित मुख्य मन्दिर है। यहाँ पर पूर्ण व्यवस्था के साथ पूजा होती है।
4– चालदा देवता का कोई निश्चित स्थान नहीं है परन्तु प्रत्येक बारह वर्ष में चालदा देवता की डोली एक मन्दिर से दूसरे मन्दिर में भाई महासू देवताओं के साथ रखी जाती है। प्रत्येक बारह वर्ष में चालदा देवता की डोली जागड़ा पर्व या 'बंराश' पर पूरे क्षेत्र में धुमायी जाती है। इस दिन सभी लोग देवता की डोली को भेंट चढ़ाकर मन्नत मांगते हैं। जो कि निश्चित पूरी होती है।

थैना में महासू मन्दिर

हनोल स्थित महासू देवता के आदेश पर वर्षों पूर्व थैना में महासू देवता का मन्दिर बनाया गया। उस काल में इस मन्दिर का निर्माण चौबीस खतों के लोगों ने मिलकर कठिन परिश्रम से बनवाया था। इसकी दीवारें मजबूत पत्थरों से निर्मित हैं एवं छत देवदार की लकड़ी से बनायी गयी है। इस मन्दिर में महासू देवता व चालदा देवता की मूर्तियाँ स्थापित हैं। मन्दिर के साथ ही चार वीरों के छोटे–छोटे चार मन्दिर बने हैं। इन देवताओं के साथ उस समय हनोल से सेवकगण आदि

थैना आये। थैना में आज भी संगीपोड़ा, जोगड़ा, खंइचाण, दियाड़ (सेवक), भूरियों ढाकी (बाजा बजाने वाला) एवं (पुजारी) इंदाण ब्राह्मण आदि मन्दिर की पूजा व्यवस्था देखते हैं। मन्दिर के समीप तालाब में नरगिस फूल का पौधा है जिसकी फूल एवं पत्तियों को मन्दिर में चढ़ाया जाता है। यहाँ पर मन्दिर में पूजा व्यवस्था एवं मन्दिर की देखरेख करने के लिए राजगुरू, बजीर, पुजारी, भण्डारी, गंडीयर, पोंतीयर, बाजगी, ठाणी, सोड़ामेंड आदि पदाधिकारी भी नियुक्त हैं। चालदा देवता का जागड़ा पर्व थैना मन्दिर से ही आरंभ होता है। चालदा देवता की डोली कचटा (खत–कोल), लखवाड़ (खत–लखवाड़), कोटा (खत–तपलाड़), चन्दाऊ (खत–अठगाँव) व जिसऊ (खत–सिलगाँव) आदि क्षेत्रों से भ्रमण करती हुई मुख्य मन्दिर थैना में वापस पहुँचती है। कुछ वर्षो बाद फिर डोली उक्त स्थानों में भ्रमण के लिए निकलती है। इन पर्वो पर सभी भक्तों की खान–पान व्यवस्था व पूजा–पाठ की व्यवस्था यहाँ के मन्दिर पदाधिकारियों द्वारा सम्पन्न की जाती है।

हनोल स्थित महासू देवता की पूजा व्यवस्था

हनोल स्थित महासू देवता का मन्दिर जौनसार–बावर के साथ–साथ उत्तरकाशी एवं हिमाचल प्रदेश के निवासियों की गहन आस्था एवं विश्वास का केन्द्र भी है। उत्तराखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों से भी श्रद्धालु इस मन्दिर में अपनी मन्नत मांगने के लिए आते रहते हैं। टोंस घाटी में स्थित यह भव्य–विशाल मन्दिर आज अपनी विशिष्ट शैली के कारण पर्यटकों का भी मनमोह लेता है। ''उत्तराखण्ड़ पुरातत्व विभाग'' द्वारा यह मन्दिर संरक्षण में लिया गया है। मुख्य मन्दिर दो खण्डों में विभाजित है। बाहरी कक्ष से भक्तगण अपनी भेंट को पण्डित के हाथों में सौंप कर पण्डित द्वारा अन्दर स्थित गर्भगृह पर माता देवलाड़ी व चार भाई महासू की मूर्तियों में भेंट चढ़ाकर भक्तों की मनोकमना के लिए पूजा–अर्चना की जाती है। विशेष पर्वो एवं त्योहारों के सुअवसर पर जौनसार–बावर के चौबीस खतों के लोग भेंट स्वरूप अपनी फसल का कुछ हिस्सा, गहनें व मनौती के रूप में बकरा (घाण्डवा) चढ़ाकर अपनी आस्था प्रकट करते हैं। इस मन्दिर की सम्पूर्ण व्यवस्था एवं देखरेख के लिए पहले से ही चार चौतरू एवं चौबीस खतों के लोगों ने मिलकर अनेक पदाधिकारी नियुक्त किये हैं। जो पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करते रहते हैं। जो इस प्रकार है :–

बजीर – बजीर हनोल मन्दिर में बजीर सर्वश्रेष्ठ पद होता है। बजीर को देवता के बाद दूसरा स्थान प्राप्त है। यह पद वशांनुगत होता है। सभी पदाधिकारियों को बजीर के आदेशानुसार कार्य करना होता है। हनोल की तरह थैना में बुद्याण परिवार के देवता के बजीर है।

राजगुरू – नाथ या जोगड़ा (जोगी) राजगुरू कहलाता है। यह वंशानुगत पद होता है। प्रत्येक पीढ़ी में एक व्यक्ति जोग धारण करके महासू देवता की पूजा में 'शंखनाद' करता है। वह जोगी बनकर पीले वस्त्र, कान में मोटे काले कुण्डल व गले में रूद्राक्ष की माला पहनकर देवता का बखान करता रहता है। जोगी अपने को ऋषि वशिष्ठ का वंशज बतलाते हैं।

पुजारी – देवता के मन्दिर में प्रातः सायं नियमित पूजा की व्यवस्था चलती रहती है। पुजारी का परिवार मांस, मदिरा का सेवन नहीं करता है। प्रत्येक परिवार से एक व्यक्ति पूजा का कार्य में अपनी बारी से मन्दिर में जाते रहते हैं। हनोल स्थित महासू मन्दिर के पुजारी जात्रा, मैन्द्रथ, पुरटाड़ एवं खत पचंगाव, नैहरा के भट्ट, नौटियाल व डोभाल आदि जातियाँ हैं। जो वर्ष भर अपनी बारी–बारी से पूजा अर्चना करते हैं।

भण्डारी – जौनसार–बावर के चौबीस खतों के प्रमुख परिवार के व्यक्तियों को भण्डारी का कार्य सौंपा जाता है। भण्डारी का कार्य क्षेत्र से चढ़ावें में आया अनाज, धन–रूपया आदि का हिसाब रखना होता है।

गंडीयर – सुबह शाम देवता के दरवार में घण्टी बजाने का कार्य थैना गाँव के लोग बारी–बारी से करते हैं।

पोंतीयर – पोंतीयर का कार्य मन्दिर के अन्दर–बाहर आंगन आदि में साफ–सफाई करना होता है। साफ–सफाई का कार्य देवता के दियाड़, (सेवक) भी किया करते हैं।

बाजगी – पूजा के समय ढोल नगाड़ा व रणसिंगा बजाने वाला वर्ग बाजगी कहलाता है। बाजगियों द्वारा प्रातः काल प्रभाती बजाकर ढोल, नगाड़े की धुन एवं ताल के साथ महासू देवता की पूजा अर्चना करायी जाती है पुनः सायं चार बजे भी ढोल बजाकर देव स्तुति की प्रक्रिया नियमित चलती रहती है।

ठाणी – ठाणी का कार्य प्रातः मन्दिर में पहुँचकर स्नान करके पुजारी, पोतीयर, गंडीयर, भण्डारी, बजीर के लिए भोजन तैयार करना होता है। इस कार्य को खत पंचगाँव के लोग आपस में बारी–बारी से करते हैं। मन्दिर के पदाधिकारी आपस में भी विचार–विमर्श करके अपने ही मध्य से ठाणी की जिम्मेदारी किसी एक व्यक्ति को सौंप देते हैं।

सोड़ामेड़ – सोड़ामेड़ का कार्य पूरे चौबीस खतों से फसल तैयार हो जाने पर अनाज एकत्रित करना होता है। प्रत्येक परिवार से अनाज जमा करके कार सेवकों के द्वारा मन्दिर में पहुँचाया जाता है। इसे 'देवता का भण्डार' मानकर पूर्ण आस्था एवं श्रद्धा से सभी लोग अनाज मन्दिर में पहुँचाने के लिए तैयार रहते हैं।

उक्त व्यवस्था से स्पष्ट पता चलता है कि जौनसार–बावर में आज भी देवी–देवताओं के प्रति पूर्ण आस्था है। इस जनजातीय क्षेत्र की यह सर्वश्रेष्ठ व अनूठी लोक परम्परा गैर–जनजातीय समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत है। जहाँ आज भी लोक संस्कृति एवं परम्पराएँ पूर्ण रूप से जीवित एवं सक्रिय हैं।

प्रत्येक दिन पूजा के समय जौनसारी समाज के लोग बड़ी विनम्र श्रद्धा एवं निष्ठा के साथ बखान करते हैं। इसमें महासू देवता की उत्पत्ति से लेकर उनके पराक्रमों का विस्तृत वर्णन है। जौनसार–बावर में महासू देवताओं के अतिरिक्त अन्य देवी–देवताओं का भी उतना ही महत्व है। इनमें विजट देवता, नाग देवता, सिल्गुर देवता, परसराम देवता, कालीमाई, कुजैठ माई, पीर देवता, दुर्गामाता, भद्राज देवता, नावणा देवता, कुकुरसिया देवता आदि की भी विशेष रूप से अर्चना होती है। सुख व दुःख आपत्ति–विपत्ति के निवारण हेतु इन देवी–देवताओं का अह्वाहन किया जाता है। पशुधन की उन्नति एवं सुरक्षा के लिए 'भदराज देवता' को पूजा जाता है।

भदराज देवता

जौनसार–बावर पशुधन की रक्षा के लिए भदराज देवता की विशेष पूजा दूध, घी, नौण आदि चढ़ाकर की जाती है। भदराज को कृष्ण का बड़ा भाई बलदाऊ कहा जाता है। भदराज देवता के मन्दिर क्षेत्र में ऊँची चोटियों पर स्थित है। भादों (भाद्रपद) की संक्राति के पर्व पर यहाँ के लोग अपनी गायों का दूध (नौण), धूप (मक्खन) व सिरनी (घी से बना हलवा) से पूजते हैं। ये घर पर गाय को देवता के नाम से रखते हैं। जिसे 'देई' कहकर सम्बोधित करते हैं। इस गाय का दूध स्वयं उपयोग करते हैं। जौनसार–बावर के समीपवर्ती गैरजनजातीय क्षेत्र जौनपुर में भी भदराज देवता की पूजा गौ पालक लोग करते हैं। मसूरी से 15 किमी0 की दूरी पर दूधली गाँव के समीप ऊँची चोटी पर भद्राज (भदराज) देवता का रमणीक भव्य मन्दिर है। मन्दिर स्थापना के सन्दर्भ में जनश्रुति है कि इस मन्दिर की मूर्ति को हिमाचल से एक व्यक्ति देवता के कहने पर इस क्षेत्र में लाया। रास्ते जब वह व्यक्ति कन्धे में मूर्ति को लेकर बिन्हार गाँव जौनसार–बावर से आगे भदराज के डाण्डे में ऊँची चोटी पर पहुँचा तो थकान लगते ही उस व्यक्ति ने मूर्ति को उसी स्थान पर विछाकर रख दिया तभी देववाणी हुई कि "मैं तो सेवा से अतिप्रसन्न हूँ भक्त कुछ वरदान मांग।" ग्रामीण व्यक्ति देवता से गायों के बारे में कहकर आगे बढ़ा और उसके पीछे गायों का झुण्ड चलने लगा। घर पहुँचते ही

उसकी पत्नी ने गायों को पालने से इन्कार कर दिया। वह व्यक्ति पुनः वापस भदराज शिखर पर गायों को लेकर चल पड़ा। यह दृश्य देखते भदराज देवता ने श्राप से उस व्यक्ति को पाषाण (पत्थर) का बना दिया। अतः इसी प्रकोप से बचने के लिए आज जौनसार–बावर के लोग अपने पशुओं की समृद्धि के लिए पर्वो एवं त्यौहार पर भदराज देवता को दूध, धूप व सिरनी का प्रसाद चढ़ाकर अपनी मनौती (मन्नत) मांगते हैं।

नाग देवता

जौनसार बावर वासी नागदेवता को शिव, शेषनाग व नागराजा के नाम से पूजते हैं। जौनसार के नागनाथ से ऊँची चोटी को ''नागशिखर'' नाम से जाना जाता है। वैशाख के महीने में शिखर स्थित मन्दिर में गेहूँ की फसल पक जाने पर (आटे का हलुवा) सिरनी चढ़ाकर अपनी अच्छी फसल की पैदावार की कामना नागदेवता से हाथ जोड़कर करते हैं। इसी आस्था व विश्वास से प्रत्येक वर्ष इस शिखर पर मेले का आयोजन किया जाता है। अकाल एवं सूखे के प्रकोप से बचने के लिए भी नागदेवता की पूजा अर्चना सभी जौनसारवासी यहाँ पहुँच कर करते हैं।

रघुनाथ देवता

रघुनाथ देवता महासू देवता का ही स्वरूप माना जाता है। मान्यता है कि सदियों पूर्व जब इस क्षेत्र में गढ़वैराट का अत्याचारी शासन था तो तब रघुनाथ देवता ने गढ़वैराट शासक का अन्त करके यहाँ के लोगों को मुक्ति दिलायी थी। इसी आस्था व परम्परा से आज भी लोग भादों व असोज के महीने में रघुनाथ देवता के मन्दिर में रात्रिभर जागरण करते हुए अपने न्याय की कामना करते हैं। इस क्षेत्र का कोई व्यक्ति किसी अन्य के द्वारा धन, सम्पत्ति या बाहुबल से परेशान किया जा रहा हो तो वह व्यक्ति रघुनाथ जी के मन्दिर में आकर अपनी गुहार लगा सकता है। जिससे देव शक्ति से उसे अवश्य न्याय प्राप्त होता है। इसी कामना से आज जौनसारवासी कोर्ट–कचहरी में न जाकर रघुनाथ देवता (महासू देवता) के मन्दिर में पहुँचकर अन्तरआत्मा की पुकार से न्याय प्राप्त करते हैं।

पाण्डव–चौंरी (पाण्डव देवता का स्थान)

जौनसार–बावर के प्रत्येक गाँव में पाण्डव–चौंरी या पाण्डवों का मन्दिर होता है। पाँच पाण्डवों (युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव) एवं द्रौपदी को यहाँ के निवासी अपना ईष्ट–कुल देव मानते हैं। उनके प्रतीक चिन्ह के रूप में धनुष–बाण, गदा, कटार आदि अस्त्र–शस्त्र मन्दिर में विराजमान रहते हैं। मन्दिर के आगे सामूहिक पंचायती आंगन में विशेष पर्व एवं त्योहारों पर पाण्डव नृत्य (मंडाण) का आयोजन किया जाता है। ढोल, दमाऊ, रणसिंगे की धुन व लय से पाण्डवों की गाथाओं का बखान होता है। इस चौरी के समीप स्थित 'ठ्र' को रक्षक देवता मानकर स्थापित किया रहता है। इस 'ठ्र' के प्रतीक के रूप में गाँव के चारों दिशाओं में खुंटों को बनाकर ग्राम सीमा बनायी जाती है। इन खूटों की विशिष्ट मान्यता है कि इनसे होकर भूत–प्रेत व अनिष्ठ शक्ति गाँव के अन्दर प्रवेश नहीं कर सकती है। इसी आस्था एवं विश्वास की परम्परा से जौनसार–बावर के प्रत्येक गांव में पाण्डवों की चौरी व ठ्र (खूटों) गाँव की रक्षा के लिए बने होते हैं।

अन्धविश्वास एवं धार्मिक मान्यताएं

मानव विषम भौगोलिक परिस्थितियों में जंगलों, नदियों, पर्वतों एवं गहरी घाटियों के समीप अपने निवास बनाकर प्रकृति की अदृश्य शक्तियों, भूत–प्रेत एवं प्रकृति के देवी–देवताओं से भयभीत होता रहा है। अतः इन शक्तियों से अपनी रक्षा करने के लिए मानव हृदय में उनके प्रति आस्था एवं अंधविश्वास जागृत हुआ तब वह इन शक्तियों को पूजने लगा। जौनसार–बावर के सामाजिक एवं

सांस्कृतिक जीवन शैली में पौराणिक मान्यताओं एवं रूढ़िवादी विचार धाराओं के चलते हुए देवी–देवताओं को प्रसन्न करने की अनेक मान्यताएं प्रचलित हैं। जैसे– जातर चढ़ाना, घाण्डवा (बकरा) चढ़ाना, छत्तर चढ़ाना, टीका चढ़ाना, रोटाड़ी चढ़ाना आदि।

जातर चढ़ाना

देवी–देवताओं के प्रति अटूट आस्था के कारण जौनसार–बावर के लोग जिस कार्य के रूक जाने से घर में सुख–समुद्धि का रास्ता बन्द हो रखा हो उस कार्य के सफल होने की देवता से प्रार्थना की जाती है कि "अमुक कार्य जब पूर्ण सफल हो जायेगा तो हम सपरिवार तेरे दरवार में पूजा करने आयेंगे।" यही दर्शन करना 'जातर चढ़ाना' कहलाता है।

घाण्डवा चढ़ाना

मनोकामना एवं कोई रूका हुआ कार्य सम्पन्न होने पर देवता के मन्दिर में जीवित बकरा चढ़ाया जाता है। इस बकरे को ही 'घाण्डवा' कहते हैं। यह बकरा देवता के ही दरबार में रखा जाता है।

छत्तर चढ़ाना

हिन्दू धर्म की आस्था के अनुसार उत्तराखण्ड के अन्य क्षेत्रों की तरह जौनसार–बावर वासी भी किसी बड़े कार्य को निर्विघ्न सम्पन्न होने पर चढ़ाने जाते हैं। यह 'छत्तर चढ़ाना' कहलाता है। कुछ लोग मनौती पूर्ण होने पर सोने व चांदी के छोटे–छोटे गोल दाने (अंश) देवता को खुश करने के लिए चढ़ाते हैं। जिसे 'टीका चढ़ाना' कहा जाता है।

रोटाड़ी चढ़ाना

देवता को खुश करने के लिए सवा मुट्ठी आटा चढ़ाना 'रोटाड़ी चढ़ाना' कहलाता है। इस सरल तरीके से भी देवता से अपनी मन्नत पूरी होने की कामना की जाती है।

जौनसारी समाज में उक्त तरीकों से अतिरिक्त देवता के माली (जिसमें देवता की आत्मा अवतरित होती है) के पास जाकर एक न्यूरा (रूपया) व चावल की थाल उसके आसन पर रख दिया जाता है। इन चावलों को माली स्वयं अपने हाथों से कांसी की थाली में डालकर घूमाता है। सामने बैठे व्यक्ति के आने का कारण व उसकी समस्याओं को बखान करने लग जाता है। साथ ही भविष्य में घटित होने वाले अनिष्ट व उससे सचेत रहने की सलाह देकर उसका निदान एवं उपाय बतलाता है। इसी आस्था के साथ आज भी जौनसार–बावर के लोग महासू देवता के माली के पास पहुँचकर अपनी आपत्ति–विपत्तियों के निराकरण के उपाय पूछकर स्वस्थ व सुखी जीवन की कामना करते हैं।

जादू–टोना (तंत्र–मंत्र)

जौनसारी समाज ने रूढ़िवादी विचारधारा के कारण अपने हित के लिए अनोखे तरीकों को अपनाया है। यहाँ जब कोई व्यक्ति बीमार हो जाता है या अचानक घर के बने हुए कार्य बिगड़ जाते हैं तो इसे दैवीय शक्ति एवं भूत–प्रेत का प्रकोप मानकर इन समस्याओं के निदान हेतु जादू–टोना या तंत्र–मंत्र का सहारा लेता है। इसी विश्वास के कारण दुःख, कष्ट के निवारण के लिए ताबीज बनाना, (भुजड़ी), ऊंजा, नजर उतारना, वायथा, उल्टाव, टाणा, पुँगरा, भानी एवं मशाण, आदि[10] विधियाँ अपनायी जाती हैं। इनमें कुछ तरीके व विधियाँ इस प्रकार है :–

दोष लगना – देवी–देवताओं के प्रति विशेष आस्था एवं अन्धविश्वास होने के कारण यदि परिवार में कोई व्यक्ति बीमार हो या रात को सोते हुए बड़बड़ाना, शरीर में कुष्ठ के निशान हो जाना आदि

देवता का प्रकोप माना जाता है। इस दोष के निवारण के लिए जिस व्यक्ति पर देवता की आत्मा अवतरित होती है। उस 'माली' के पास जाकर उपाय पूछा जाता है और माली उपाय बताकर पण्डित से देवता की पूजा कराने की सलाह देता है। पण्डित द्वारा पोथी (पुस्तक) खोलकर 'गणना' की जाती है। गणना करने के लिए कस्तूरी मृग के दाँत का 'पासा' बना होता है। जिसे फेंककर संख्याएं ज्ञात की जाती हैं। पण्डित उसी संख्या का पृष्ठ खोलकर पोथी में लिखा उपचार का तरीका यजमान को बतलाता है। पण्डित के बताये गये तरीके के अनुसार उपचार करने से दोष मुक्त होने की कामना की जाती है।

मनौती करना– घर परिवार में बीमार व्यक्ति के ठीक होने की प्रार्थना करना 'मनौती' कहलाती है। इसके लिए बीमार व्यक्ति के घर का सदस्य देव मन्दिर में जाकर हाथ जोड़कर मनौती करता है कि ''मैं तेरे दरवार में छत्तर या घाण्डवा (बकरा) चढ़ाऊँगा। इसी कामना के साथ बीमार व्यक्ति के ठीक होने पर मन्दिर में सोने का छत्तर या बकरा चढ़ाने की परम्परा आज भी व्याप्त है।

नजर उतारना– जब कोई छोटा बच्चा अचानक बीमार हो जाता है या रोता ही रहता है तो यह माना जाता है कि इस पर किसी 'डाग' की नजर लग गयी है। 'डाग' उस स्त्री को कहा जाता है जो कि बुरी दृष्टि या तंत्र–मंत्र में पारंगत होती है। ये डाग या डायन अपनी तांत्रिक शक्ति से किसी को भी बीमार अथवा मृत्यु तक भी पहुँचा सकती हैं। ऐसी स्त्रियों की बुरी नजर से बचाने के लिए लाल मिर्च एवं कच्चे आटे का गोला बनाकर नौ बार बीमार व्यक्ति के सिर के ऊपर फिराकर (घुमाकर) गाँव के बाहर चौराह पर रख दिया जाता है। जहाँ चलते–फिरते समय लोगों के जूते पड़ने से बुरी नजर समाप्त होने की कामना की जाती है। इसके अलावा भोजपत्र या लाल कपड़े के अन्दर मंत्र लिखकर ताबीज बनाकर बच्चे के गले में बांधने से भी बुरी नजर हट जाती है।

ऊंजा– इसमें बीमार व्यक्ति के शरीर पर गाय का दूध व गाय का मूत्र मिश्रण करके मोर पंख या दूब घास से पुरोहित के द्वारा मंत्रों का उच्चारण करते हुए छींटे मारे जाते हैं। दिन में तीन चार बार मंत्र पढ़कर बीमारी को दूर भगाने की कोशिश की जाती है। यह तरीका 'ऊँजा' कहलाता है। यदि बीमार व्यक्ति झाड़–फूंक से ठीक नहीं होता है, तो उसे भूत–प्रेत या दुष्ट आत्मा का प्रकोप माना जाता है। भूत–प्रेत आदि आत्माओं को सन्तुष्ट करने के लिए तान्त्रिक को बुलाकर बीमार व्यक्ति के घर के सदस्य गाँव के बाहर चौराह पर मुर्गे व बकरे की बलि चढ़ाते हैं। यह प्रक्रिया 'बायथा' कहलाती है।

भानी– जब बीमार व्यक्ति पर भूत–प्रेत या किसी भटकती आत्मा का प्रकोप समझा जाता है। इसके लिए तान्त्रिक द्वारा मंत्र पढ़ते हुए कांसे की थाली बजायी जाती है और उस व्यक्ति से उन आत्माओं को भागने के लिए विवश किया जाता है। ऐसा करने से भी रोगी या बीमार व्यक्ति ठीक होने लगता है।

पुंगरा– जब कोई व्यक्ति किसी पशु या मनुष्य से अचानक डर जाता है या रात को सोते समय अचानक उठकर चिल्लाने लग जाता है तो ऐसे व्यक्ति को भय रहित करने के लिए एक तरीका अपनाया जाता है, इसमें एक खाली बर्तन भड्डू या पतीली में कोई जलती हुई लकड़ी या कपड़े का टुकड़ा डाला जाता है। पानी से भरे तसले में उस बर्तन को उल्टा कर दिया जाता है। कुछ देर में तसले का पानी बर्तन के अन्दर चला जाता है। दोनों पैरों से तसले को दबाकर पकड़ने से उसके ऊपर रखा बर्तन अचानक जोर की आवाज के साथ पानी को गिरा देता है। यह उपाय गोधूली पर करने से भयभीत व्यक्ति का भय समाप्त होकर सामान्य रूप से चलने–फिरने लग जाता है।

मशाण– जब किसी व्यक्ति की अचानक अकाल मृत्यु हो जाती है तो उस व्यक्ति की 'रथ आत्मा' इधर–उधर भटकती रही है। वह आत्मा परिवार के किसी सदस्य पर अवतरित होकर रोते हुए अपनी इच्छा व्यक्त करती है। तब पुरोहित द्वारा उस मशाण 'आत्मा' को नचाकर उससे बातचीत करके

आने का कारण पूछकर तत्पश्चात उस 'आत्मा' को पूजा–पाठ करके सन्तुष्ट किया जाता है। यह विधि 'मशाण' कहलाती हैं। ये परम्पराएं एवं मान्यताएं आज स्वास्थ्य एवं शिक्षा के प्रचार–प्रसार के कारण जौनसारी समाज से विलुप्त हो चुकी हैं। आज व्यक्ति के बीमार हो जाने पर उसे तंत्र–मंत्र से नहीं बल्कि समय पर उचित चिकित्सा प्रणाली से ठीक किया जाता है। सामाजिक जागरूकता होने से भूत–प्रेत, जादू–टोना जैसी मान्यताओं को भी समाज से हटा कर यहाँ के लोगों का बाहरी समाज में घुलना–मिलना आरंभ हो चुका है।

राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं। मेरे विचार में हिंदी ही ऐसी भाषा है।

लोकमान्य तिलक